Date – 24-07-2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. – Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. – 8409587640
Class – B.A. – I (Hons.)
Topic – Distinction between Judgement: Kant

Scanned with CamScanner

संश्लेषणात्मक और विश्लेषणात्मक निर्णयों में अंतर

Distinction between Synthetic and Analytic Judgement

1. कांट के मतानुसार विश्लेषणात्मक निर्णय वह है जिसमें उसका विधेय उद्देश्य ही में पहले से ही गुप्त रूप से निहित रहता है, जैसे- वस्तु में विस्तार है।
विश्लेषणात्मक निर्णयों के विपरीत संश्लेषणात्मक निर्णय वे होते हैं, जिनमें विधेय पहले से ही उद्देश्य पद में निहित नहीं रहता है; जैसे - गुलाब लाल है; यहाँ गुलाब कहने मात्र से उसके लाल रंग का ज्ञान नहीं होता, क्योंकि गुलाब कई रंगों का हो सकता है; यहाँ इस वाक्य की सत्यता अनुभव पर आधारित है;

2. विश्लेषणात्मक निर्णय में अनिवार्यता पाई जाती है; परन्तु इससे व्यापकता एवं नवीन ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती।

3. सभी विश्लेषणात्मक निर्णय प्राग्नुभविक निर्णय होते हैं।

Scanned with CamScanner

प्रागनुभविक और उत्तरानुभविक निर्णयों में अंतर
(Distinction between Apriori and Aposteriori Judgements)

(1) प्रागनुभविक निर्णय सभी प्रकार के अनुभवों से परे होते हैं। इनकी सत्यता अनुभव की अपेक्षा नहीं रखती। उत्तरानुभविक निर्णय अनुभवाश्रित होते हैं। इनकी सत्यता - असत्यता अनुभव सापेक्ष होती है।

(2) प्रागनुभविक निर्णय अनिवार्य एवं सार्वभौम होते हैं। इनकी सत्यता सभी देश और काल में अपवादरहित रूप में लागू होती है। उत्तरानुभविक निर्णय अनुभवाश्रित होने के कारण सार्वभौम नहीं हो सकते। उत्तरानुभविक निर्णय अनुभवाश्रित होने के कारण संभाव्य ही होते हैं, अनिवार्य नहीं। इनका विपरीत सोचने पर कोई व्याघात पैदा नहीं होता।

Scanned with CamScanner